ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्...

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 जून 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११८
युगाब्द-५११८, अंक-८६, वर्ष-१०
आषाढ़ मास, विक्रमी २०७४ (जून 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः। तेषां पाहि श्रुधी हवम्।। -ऋ० १। १। ३। १

व्याख्यान- [(वायवा याहि दर्शत)] हे अनन्तबल परेश वायो दर्शनीय! आप अपनी कृपा से ही हमको प्राप्त हों। (इमे सोमा:) हम लोगों ने अपनी अल्पशक्ति से सोम (सोमवल्यादि) ओषधियों का उत्तम रस सम्पादन किया है। और जो कुछ भी हमारे श्रेष्ठ पदार्थ हैं, वे आपके लिए ही (अरंकृता:) अलंकृत अर्थात् उत्तम रीति से हमने बनाये हैं। वे सब आपके समर्पण किये गये हैं, [(तेषां पाहि)] उन को आप स्वीकार करो (सर्वात्मा से पान करो)। (श्रुधि हवम्) हम दीनों की पुकार सुनकर जैसे पिता को पुत्र छोटी चीज समर्पण करता है, उस पर पिता अत्यन्त प्रसन्न होता है, वैसे आप हम पर प्रसन्न होओ।।

सम्पादकीय

।। आर्य अभ्युदय ।।

संसार में कौन प्रतिष्ठित होता है? कौन विस्तृत होता है? किसके सिद्धन्तों को दुनिया मानती है? किसके बोलने का दुनिया पर प्रभाव पड़ता है? ऐसे-ऐसे अनेक प्रश्न हैं और इन प्रश्नों उत्तर विचारना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि हम मनुष्य हैं और मनुष्य का अर्थ ही मनन्शील होता है। अत: एक बार पुन: उपरोक्त प्रश्नों को विचारिए! स्वयं से उत्तर पूछिए! और तब आगे बढ़िए।

पाठकगणों! वर्त्तमान में इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है- जिसका प्रचार है। इस समय को प्रचार युग कह सकते हैं, इस प्रचार के परिणाम स्वरूप उपयोगी वस्तुएं प्रचुरमात्रा में बिकती हैं जिनकी आवश्यकता अतीव न्यून होती है, ऐसी भी वस्तुएं बिकती हैं जिनकी आवश्यकता नहीं होती और तो और ऐसी भी वस्तुएं बिक जाती हैं जिन्हें लेकर ग्राहक को पश्चाताप ही करना पड़ता है। ठीक इसी प्रकार आप विचारधारा को भी समझ सकते हैं, वर्तमान में सम्पूर्ण विश्वभर में सर्वाधिक अनुयायी ईसाई मत के हैं, दूसरे क्रम पर इस्लाम मत के हैं, जबकि हम सब जानते है कि ईसाई व इस्लाम मत अवैज्ञानिक, अतार्किक, मूढ़मान्यताओं से भरे पड़े हैं। अपने देश की ओर दृष्टिपात करें तो नाना प्रकार के मत जैसे ब्रह्माकुमारी, निरंकारी, सच्चासौदा, राधास्वामी, कबीरपन्थी आदि हैं। अब विचारो कि क्या यह सब सत्य के आधार पर बढ़े हैं? क्या इनकी विधियों से, विधानों से, आचरणों से मानव जीवन सुख, समृद्धि से सम्पन्न उन्नति की दिशा में बढ़ सकता है? यदि हम गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे तो पायेंगे कि कभी नहीं! तो बढ़ने का कारण? एकमात्र प्रचार।।

आइए इसे इस प्रकार समझने का प्रयास करते हैं- अभी-अभी कुछ दिन पूर्व रूस में हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री जी ने अमेरिका के राष्ट्रपति महोदय के द्वारा वैश्विक पर्यावरण प्रदूषण समस्या की उपेक्षा कर पेरिस में किये गये समझौते से विमुख होने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि 'हम कोई आज से वैश्विक पर्यावरण की चिन्ता नहीं कर रहे, अपितु हम तो वेदों के काल से, पाँच हजार वर्ष से पर्यावरण के प्रति कर्तव्य निर्वाहन करते आ रहे हैं, हमारे यहाँ तो अथर्ववेद में नैसर्गिक ज्ञान है'।

माननीय प्रधानमंत्री जी के पाँच हजार वर्ष के कालज्ञान पर सामाजिक माध्यम (सोसियल मीडिया)पर आर्यजनों के द्वारा बहुत सी बड़ी-बड़ी लेखमाला (पोस्ट) पढ़ने को मिलीं, जिनमें आक्रोश पूर्वक लिखा गया है कि उन्हें वेद के उत्पत्ति काल का भी नहीं पता, किन्तु विचारणीय विषय यह भी है कि हमने अर्थात् आर्यजनों ने इस विषय में कितना प्रचार किया? जिस सृष्टिगणना को हम मानते हैं और पौराणिक, कर्मकाण्डी भी अपने संकल्पपाठ में पढ़ते हैं, वह किसी पुस्तक में जो समाज में व्याप्त हो, क्या कभी प्रकाशित हुई है? किसी भी सरकारी पाठ्यपुस्तक में, किसी भी प्रपत्रों (दस्तावेजों) में, यह गणना मान्य है? नहीं। तो फिर एक सरकार का मुखिया तो वही बोलेगा जो उसके पत्रक बोलेंगे। लेकिन प्रश्न यह है कि-

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

क्या हमने इस सत्य कालगणना की प्रतिस्थापना के लिए स्वतन्त्रता के बाद से आजतक कोई उपक्रम किया? कोई वैचारिक आन्दोलन चलाया? क्या जन-जन में अपनी शुद्ध-सत्य कालगणना की प्रतिष्ठा की? क्या हमने प्रचार-प्रसार किया? नहीं! और जब कोई उपाय, कोई पुरुषार्थ किया ही नहीं तब हम मात्र लेखमाला लिखते रहें घर बैठकर, तो कुछ होने वाला नहीं है।

तो फिर कैसे होगा? प्रचार से होगा। प्रचार गांव-गांव में, नगर-नगर में, घर-घर में, जन-जन में करना पड़ेगा। और इसलिए अब तक जो हुआ सो हुआ लेकिन अब करना होगा प्रचार, जैसे हमारे सैकड़ों आर्यगण कर रहे हैं- जीन्द जनपद में, बागपत जनपद में। जैसे किया है कैथल जनपद में, शाहजहाँपुर में। इसी प्रकार जब हम देश के कोने-कोने में, गांव-गांव में, शहर-शहर में जन-जन प्रचार करेंगे तभी आर्य प्रतिष्ठा होगी, आर्य विस्तार होगा, आर्य सिद्धन्तों को दुनिया मानेगी, आर्यों के वक्तव्यों का दुनिया पर प्रभाव पड़ेगा। इसके लिए चाहिए बस प्रचार-प्रचार और प्रचार, इसी से होगा आर्य अभ्युदय।।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना अन्य माध्यमों से आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ समय पर निर्धारित कर अधिकारियों से अनुमति ले लेवें।

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	आर्यसमाज भवन, न्यू पालम विहार, गुरुग्राम, हरियाणा	10-11 जून	आर्य सुरेन्द्र, आचार्य रामवीर	9555222920,8010202003
2.	मिलिनियम पब्लिक स्कूल, बागपत रोड़, मेरठ, उ.प्र.	17-18 जून	मोहित आर्य, राजेन्द्र आर्य	7300607813,9897520494
3.	अग्रवाल धर्मशाला, कलायत, कैथल, हरियाणा	17-18 जून	आर्य भूमिदेव, आर्य अमनदीप	9541244000,7876854056
4.	गांव जसवंती, कैथल, हरियाणा	17-18 जून	आर्य गुरप्रीत, गौरव आर्य	9728857481,8059503750
5.	श्रीहरि पब्लिक स्कूल, सिरोरा, लोनी, गाजियाबाद, उ.प्र.	17-18 जून	आर्य अरविन्द, आर्य नेकीराम	9312003820,9013005696
6.	गांव मोविनन्द, जिला पंचकुला, हरियाणा	24-25 जून	आर्य रमेश	9815009194
7.	आर्यसमाज मॉडल टाऊन, करनाल, हरियाणा	24-25 जून	आर्य राजकुमार, आर्य अखिलेश	9416368474,9254567478
8.	खण्डेलवाल धर्मशाला, जुरेहरा, भरतपुर, राजस्थान	25-26 जून	आर्य चरन सिंह, गजेन्द्र आर्य	9785239372,9783867563
महिला प्रशिक्षण सत्र				
1.	आर्यसमाज मॉडल टाऊन, करनाल, हरियाणा	17-18 जून	आर्य राजकुमार, आर्य अखिलेश	9416368474,9254567478

मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उस को मानना, मनवाना और जो असत्य है उस को छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त्त में प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उस का स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उन का त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूँ क्योंकि ऐसा करना मनुष्यधर्म से बहिः है।

—ऋषि दयानन्द

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	09 जून	दिन-शुक्रवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-ज्येष्ठा
अमावस्या	24 जून	दिन-शनिवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-आद्रा
पूर्णिमा	9 जुलाई	दिन-रविवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा
अमावस्या	23 जुलाई	दिन-रविवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पुर्नवसु

श्रद्धाभाव के साथ पुरुषार्थ

-आचार्य सतीश

परिवार, समाज, या राष्ट्र के उत्थान का कार्य बिना किए नहीं हो सकता है। अगर कोई यह सोचे कि उसे कुछ न करना पडे, हमारा कार्य ऐसे ही चलता रहे, हमारी दिनचर्या पर कोई असर न पड़े और समाज व राष्ट्र का कार्य हो जाए। समाज भी उन्नति कर जाए, समाज में से सब कुरीतियाँ दूर हो जाएं, हमारे आने वाली पीढ़ियों को बहुत अच्छा वातावरण मिल जाए, वे खूब फलें-फूलें, राष्ट्र का उत्थान हो जाए, सब व्यवस्थाएं ठीक हो जाएं, सब सुरक्षित हो जाएं, हमारे जीवन में कोई व्यवधान न रहे व्यवस्थाओं के कारण। और यह सब मुझे न करना पड़े अपितु स्वयेमव हो जाए या कोई दूसरा कर दे। इस प्रकार के विचार आज अनेक युवाओं में घर कर गये हैं। लेकिन यह भी निश्चित है कि कार्य करने के लिए व उसको परिणाम तक लाने के लिए पुरुषार्थ अत्यन्त आवश्यक है इसके बिना कोई भी कार्य नहीं होता है। कार्य स्वयं नहीं होता, किसी न किसी को करना पड़ता है, इच्छा होते हुए भी वह फलीभूत नहीं होती यदि उसके लिए पुरुषार्थ न किया जाए। व्यक्ति किसी कार्य को करना चाहे और उसके लिए पुरुषार्थ न करे तो वह कार्य हो नहीं सकता है। हाँ यदि पुरुषार्थ करेगा तो कार्य अवश्य होगा। हमें इस मासिकता से निकलना होगा कि मैं पुरुषार्थ न करूँ, मैं त्याग न करूँ और कार्य होता रहे। हमें प्रत्येक को अपने-अपने स्तर पर कार्य करना होगा, पुरुषार्थ करना होगा, त्याग करना होगा- अपने समय का, अपने संसाधनों का, अपने सामर्थ्य का। इसके बिना सफलता संभव नहीं। समाज और राष्ट्र की परिस्थितियों को ठीक करने के लिए, अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए हम सब का पुरुषार्थ आवश्यक है।

हाँ हर व्यक्ति का स्तर अलग-अलग हो सकता है, सामर्थ्य अलग-अलग हो सकता है, योग्यता व कार्य अलग-अलग हो सकती है, लेकिन अपनी सामर्थ्य, योग्यता व रूचि के अनुसार पुरुषार्थ अवश्य ही करना होगा, तभी मिलकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं।

आर्यों/आर्याओं! यहाँ एक बात और विचारणीय है कि क्या हम बिना भावना के पुरुषार्थ कर सकते हैं। यदि किसी कार्य, लक्ष्य या सिद्धान्त के प्रति हमारी श्रद्धा ही नहीं है तो क्या हम उसके लिए वह पुरुषार्थ कर सकते हैं, जिससे वह कार्य सफल हो सके। बिना भावना व लक्ष्य के प्रति श्रद्धाभाव के हुए यदि पुरुषार्थ करते भी हैं तो उससे सफलता नहीं मिलती है क्योंकि वह पुरुषार्थ आधा-अधूरा होता है। अत: कार्य करने और कार्य में सफलता के लिए पुरुषार्थ के साथ-साथ उसके प्रति श्रद्धाभाव का होना भी आवश्यक है। जो यह समझते हैं कि हम यदि पुरुषार्थ करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी, वे निश्चित रूप से यह जान लें कि सफलता के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करना होता है और पूर्ण पुरुषार्थ बिना श्रद्धाभाव के नहीं होता है। अत: हम आर्य निर्माण के कार्य में लगे हैं तो हमारा उस कार्य के प्रति श्रद्धाभाव होना चाहिए। हमारी पूर्ण श्रद्धा इसके प्रति होनी चाहिए कि आर्य निर्माण से ही राष्ट्र व समाज का निर्माण होगा, राष्ट्र व समाज व्यवस्थित होगा तथा भविष्य भी सुरक्षित होगा। हमें पूर्णरूपेण निश्चित हो जाना चाहिए कि इसके अलावा हमारे पास और कोई उपाय नहीं है। जब यह भाव उत्पन्न होते हैं तभी पूर्ण पुरुषार्थ उसके लिए किया जाता है। इस प्रकार से जहाँ-जहाँ, जब-जब आर्यों ने कार्य किया है तभी अधिक सफलता मिली है।

'आर्य निर्माण महासत्रों का आयोजन'

जब लक्ष्य बड़ा होता है तो कार्य का स्तर भी बड़ा करना पड़ता है, कार्य की निरन्तरता तो आवश्यक है ही। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा छोटे स्तर पर निरन्तर आर्य निर्माण सत्रों का आयोजन चल रहा है जो आवश्यक भी है और प्रभावपूर्ण भी। उसी विद्या को और अधिक लोगों तक एक साथ कैसे पहुँचाया जाए इसके लिए बड़े स्तर पर सत्रों के आयोजन की रूपरेखा बनी, जिससे एक साथ हजारों लोगों तक उस वेद विद्या को पहुँचाया जा सकता है। इसी क्रम में पिछले वर्ष मार्च में वाराणसी में इसका प्रारम्भ किया गया और इस वर्ष मार्च में कैथल (हरियाणा) में इसको पुन: आयोजित किया गया। अब यह महासत्रों की श्रंखला प्रारम्भ हो गई है और शाहजहाँपुर (उत्तरप्रदेश), जीन्द (हरियाणा) तथा बागपत (उत्तरप्रदेश) में आयोजन हुए हैं या होने जा रहे हैं। इन महासत्रों में 500 से 1000 या 1500 युवा तक भाग लेकर आर्य विद्या को ग्रहण करते हैं। अब अन्य स्थानों के आर्य भी इसी प्रकार का आयोजन चाहते हैं। इसमें सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों की संख्या को और भी बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार के महासत्रों का प्रचार एक वृहत आयोजन की तरह करके गांव-गांव में होना चाहिए। जिस क्षेत्र में इसका आयोजन हो, प्रयास यह होना चाहिए कि उस क्षेत्र के अर्न्तगत कोई भी व्यक्ति महासत्र की सुचना व उसके महत्व से वंचित न रहे, जानकारी प्रत्येक तक पहुँचे। क्षेत्र में प्रत्येक सामाजिक समूह, अखाड़े, व्यायामशाला, विद्यालय, शिक्षा संस्थान, तकनीकी संस्थान, महाविद्यालय व अन्य प्रकार के संस्थान जो उस क्षेत्र में हों, सब स्थानों पर आर्यगण पंहुँचे सत्र के प्रचार-प्रसार के लिए। जब इस प्रकार प्रत्येक के पास वह सूचना पंहुँचती है तो उसमें से अधिक से अधिक परिणाम प्राप्त होता है यह क्षेत्र में प्रचार का एक अच्छा माध्यम बनता है और यही प्रयास धीरे-धीरे एक आन्दोलन का रूप ले सकता है। जीन्द के आर्यगणों ने इसके लिए बहुत सराहनीय प्रयास किया है और अन्य स्थानों पर भी आर्यगण इसी प्रकार से प्रयासरत हैं।

कार्य पूर्ण करने का उपाय-आत्मिक बल

–आचार्या सुमनवती

हम अपने जीवन में बहुत से कार्य शुरु तो करते हैं लेकिन उन्हें पूरा नहीं कर पाते। कार्य शुरु तो कर दिया लेकिन कार्य पूरा होने से पहले ही हम यह कह कर कार्य अधूरा छोड़ देते हैं कि हम में इस कार्य को करने की शक्ति नहीं है, बल नहीं है। कारण क्या रहा होगा कि कार्य शुरु किया तब तो शिक्षा, शक्ति, संसाधन, विद्या बल सब था, अब नहीं रहा। क्या अब सब कुछ बदल गया? जब हम परीक्षा करते हैं तो पाते हैं कि किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए आत्मिक बल की आवश्यकता होती है। यद्यपि शारीरिक बल व धन बल भी सांसारिक कार्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक है लेकिन यदि आत्मिक बल है तो ये साधन स्वयमेव जुट जाते हैं। लेकिन इनके होने पर आत्मिक बल भी हो जरूरी नहीं है, न ही इनसे आत्मिक बल उत्पन्न होता है।

अब प्रश्न यह है कि आत्मिक बल क्या है जिसके होने से सभी कार्य पूर्ण हो सकते हैं और जिसके न होने से आवश्यक वस्तुओं की विद्यमानता में भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता । जब आत्मा में ज्ञान व प्रयत्न आदि गुण बढ़ जाते हैं तो बल भी बढ़ जाता है। यह ज्ञान व प्रयत्न का बढ़ना ही आत्मिक बल है। आत्मा में ज्ञान व प्रयत्न की निर्बलता ही आत्मिक निर्बलता है। जब व्यक्ति का आत्मिक बल बढ़ जाता है तो वो कठिन से कठिन कार्य भी कर सकता है। बिना आत्मा के कर्म हो नहीं सकता, ऋषि कणाद जी ने वैशेषिक दर्शन में आत्मसंयोग से ही कर्म माना है। उन्होंने लिखा है :-

आत्मसंयोगप्रयत्नाभ्यां हस्ते कर्म॥

जब आत्मा का हाथ के साथ सम्बन्ध होता है तभी हाथ में कर्म अर्थात् कार्य करने की शक्ति आती है, बिना आत्मसंयोग के नहीं।

ज्ञान व प्रयत्न आत्मा के दो गुण हैं। इनकी वृद्धि का नाम आत्मिक बल वृद्धि और घटने का नाम आत्मिक बल की हानि है। अब यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि इनके बढ़ने व घटने के क्या कारण हैं? इसका उत्तर यह है कि जहाँ अनुकूल पदार्थ मिलते हैं वहाँ यह बढ़ जाता है। जहाँ इसके विपरीत परिस्थियाँ मिलती हैं, वहाँ यह घट जाता है, जैसे- जहाँ बहुत जोर से हवा चल रही हो वहाँ दीपक बुझ जाता है और जहाँ हवा कम हो वहाँ दीपक जलता रहता है। अब वे कौन से पदार्थ हैं जिससे आत्मा का बल बढ़ता है और कौन से ऐसे पदार्थ हैं जिससे आत्मा का बल घटता है। इस पर गम्भीरता से विचार कराने पर वे दो ही पदार्थ हैं –एक प्रकृति दूसरा परमेश्वर जिससे आत्मा का सम्बन्ध है। प्रकृति परिवर्तनशील व ज्ञान शून्य है। परमेश्वर ज्ञानस्वरूप आनन्द स्वरूप है। जितना जीव प्राकृतिक शक्तियों से अधिक जुड़ेगा उसकी आत्मिक शक्तियाँ न्यून होती चली जाएँगी। दूसरी ओर जब आत्मा ज्ञान स्वरूप व क्रियावान परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ेगा तो उसके ज्ञान व क्रिया भी अधिक होती जाएगी जैसे दिया सलाई को अधिक देर तक धूप में रखने से उसकी प्रज्जवलन शक्ति बढ़ जाती है। यदि हम लौकिक इतिहास का विचारपूर्ण अवलोकन करें, तो हमें ज्ञात होगा कि आत्मिक बल ईश्वर भक्तों की ही सम्पति है।

उदाहरण के रूप में पता लगाते हैं कि क्या कारण था कि श्री रामचन्द्र जी ने पिता की आज्ञा पाते ही राज्य को तुच्छ समझकर त्याग दिया और वन में चले, क्या कारण था कि लक्ष्मण जी ने सब प्रकार के सुखों का त्यागकर भाई के साथ वन को जाना स्वीकार किया? क्या कारण था कि सीता जैसे सुकुमारी रानी ने वनों में घूमना स्वीकार किया और राज्य के आनन्द को तुच्छ समझा? क्या कारण था कि राजा हरिश्चन्द्र इतनी आपतियों के उपस्थित होने पर भी सत्य पर दृढ़ रहा? क्या कारण था कि महात्मा भृतहरी ने अपने सारे राज्य को तुच्छ समझकर जंगल में रहना स्वीकार किया? क्या कारण था कि गुरु तेग बहादुर ने यवनों के हाथ मरना स्वीकार किया ? क्या कारण था कि गुरु गोबिन्द ने स्वयं व अपने चारों बेटों को बलिदान कर दिया? क्या कारण था कि महात्मा पूर्ण भक्त ने सहस्रों आपत्तियों को सहन किया परन्तु पाप की ओर आकर्षित न हुआ? क्या कारण था कि बालक हकीकतराय ने बारह वर्ष की अवस्था में यवनों के हाथों मरना स्वीकार किया परन्तु धर्म को नहीं त्यागा? क्या कारण था कि ऋषि दयानन्द ने सारे भारतवर्ष को शत्रु बनाना स्वीकार किया? ईंट, पत्थर, गोलियाँ जहर खाना स्वीकार कर लिया परन्तु अधर्म को नहीं बढ़ने दिया और धर्म के विरूद्ध चलना महापाप समझा? हम विचार करेंगे तो पाएँगे कि यह आत्मबल था जिसने इन महात्माओं को संसार के मुकाबले में विजयी बनाया। हम कितना गिनाएँगे इतिहास? इतिहास तो ऐसे दृष्टान्तों से भरा पड़ा है।

ईश्वर की उपासना से आत्मिक बल मिलता है और वह ऐसे उन्नति के कार्य करता है जिससे संसार में सुख फैलता है। दूसरे ईश्वरोपासना से ईश्वरीय शक्ति अर्थात् वैदिक ज्ञान की प्राप्ति, हरेक जीव की ज्ञान शक्ति बढ़ जाती है। जितने योगी हुए हैं उन्होंने अपनी आत्मा को प्रकृति से हटा कर ईश्वर की और लगाया परन्तु जितने प्रकृति के उपासक हुए अर्थात् जिन्होंने भौतिक पदार्थों में मन को लगाया वे आत्मिक बल से रहित, दास होकर रह गए। दु:खों से जीवन भी घिरे रहे।

आत्मा एक राजा है जिसका देश यह शरीर है। इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि इत्यादि उसके कर्मचारी हैं। यदि राजा बलवान है तो सब पर शासन करता है और सबको अपनी इच्छानुसार चलाता है। परन्तु जब राजा निर्बल हो जाता है तो सब कर्मचारी उसे दबा लेते हैं। **आत्मिक बल की दशा में जिस कार्य को वह तुच्छ समझता था अब आत्मिक दुर्बलता की दशा में उसे जरूरी समझता है। आत्मिक प्रबलता की दशा में जिस कार्य को सुगम कहता था अब वे उसे अति कठिन लगते हैं।** यह तो हम सभी जानते हैं कि जिस जाति का नायक योग्य नहीं होता वहाँ सदा असफलता रहती है। जिस देश का राजा अयोग्य हो तो प्रजा सदा कष्ट उठाती है। राजा का काम राज प्रवृति वाला ही कर सकता है, दास प्रवृति वाला नहीं। इसी प्रकार प्रबल आत्मा के कार्य निर्बल आत्मा से नहीं हो सकते। संसार में देखा जाता है कि जिस मनुष्य की इन्द्रियाँ उसके वश में न हों तो उसका परिवार उसके वश में नहीं रहता और जो अपने परिवार पर शासन नहीं कर सकता वह अपने मोहल्ले, गांव, प्रान्त, देश व संसार पर कैसे शासन कर सकता है।

यदि हम अपने ऊपर और संसार पर शासन करना चाहते हैं तो हमें आत्मिक बल को बढ़ाना होगा जिसका एकमात्र उपाय है उपासना। जिससे हम इन्द्रियजयी होंगे और वर्तमान में जो भी समस्याएँ हैं (भ्रष्टाचार, बलात्कार, भ्रूण हत्या, आतंकवाद, भेदभाव आदि) वे सभी हल हो सकती हैं। और सारा समाज भयमुक्त, समृद्ध व खुशहाल हो सकता है अत: आओ हम सब अष्टांग योग से आत्मिक बल बढ़ाएं।

आर्य प्रचारक कक्षा (दिल्ली) में आचार्य सतीश जी

'परम-धर्म'

–श्री मोहनलाल शास्त्री

।। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।।

वेद को श्रुति कहा जाता है, क्योंकि वेदमन्त्र सुनकर ही स्मरण किए जाते हैं, बिना आचार्य के उद्धात्त-अनुदात्त-स्वरित स्वरों का ज्ञान होना सम्भव ही नहीं, इसका शिक्षण मात्र पुस्तकों से पढ़कर नहीं हो सकता।

वेद शब्दविद्या है, शब्द को अक्षर भी कहा है।

तमक्षरं ब्रह्म परम पवित्रं गुहाशयं सम्यगुशन्ति विप्रा।
स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव, सम्यक प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति।।
(सूत्रात्मक-पाणिनीय शिक्षा)

विद्वान् लोग, उस आकाश वायु प्रतिपादित, अविनाशी विद्या, सुशिक्षा सहित बुद्धि में स्थित, अत्युत्तम शुद्ध शब्द राशि की अच्छी प्रकार प्राप्ति की कामना करते हैं, और वह अच्छी प्रकार प्रयोग किया हुआ शब्द शरीर, मन, आत्मा और सम्बन्धियों के लिए इस संसार के सब सुख से मनुष्य को सम्बद्ध कर देता है। (**एकः शब्दः सम्यक् प्रयोगे सुष्ठु ज्ञाते स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति।**)

ऐसी महितामयी शब्द-विद्या वेद है, इसीलिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने वेद पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म कहा है, सब, कहने का तात्पर्य आचरण युक्त आर्य तथा परम्परागत नाम- मात्र के माने-जाने वाले आर्यों से भी है, फिर परमधर्म अर्थात् आत्यन्तिक कर्त्तव्य है।

इसलिए आर्यों को इस धर्म का पालन आवश्यक है, किन्तु चिर अतीत से इस देशवासियों की आदत ही बन गई है, सिद्धान्त को जानना, समीक्षा करना परन्तु कार्य रूप में परिणित न कर सकना।

अतः अब आर्यों को इस आदत को छोड़कर परमधर्म को पालन करने का सत्प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं-जब भी कोई सम्मेलन, उत्सव, महापुरुषों की जयन्ति या निर्वाण दिवस (बलिदान दिवस) के समारोह हों तो उनमें वेद-पाठ का कम से कम 15-20 मिनट का समय निर्धारित किया जाय। वेद के सिद्धान्तों पर चर्चा हो, उनकी जानकारी दी जाए। जो परम्पराएं वेद से जुड़ी हैं लेकिन जिनका स्वरूप समाज में बिगड़ चुका है अर्थात् विकृत रूप में प्रचलित हैं उनका सही-सही स्वरूप बताया जाए और यह सब सामूहिक व सामाजिक आयोजनों में ही नहीं अपितु व्यक्तिगत आयोजनों में भी होना चाहिए। बहुत से कार्यक्रमों को देखने-सुनने से ज्ञात हुआ कि गुरुकुल के छात्र अधिकतर कार्यक्रमों में सम्मिलित होते हैं, इसलिए छात्रों से सस्वर वेद-पाठ कराया जा सकता है। दो-दो मन्त्र सभी वेदों के उनके भावार्थ सहित पाठ हों तो वक्ता-श्रोता सबका कल्याण सम्भव है।

इस प्रक्रिया से छात्रों को मन्त्रों के भावार्थ व्यक्त करने का अवसर मिलेगा, सभा में बोलने का अभ्यास होगा तथा गुरुकुल का परिचय भी जनसामान्य को होगा। इस प्रकार आर्य समाज का तीसरा नियम, कार्यरूप में परिणित होकर समाज के हित साधन का कारक बनेगा।

10 जून-09 जुलाई 2017 **आषाढ़** 23 मार्च ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
					मूल शुक्ल प्रतिपदा 10 जून	मूल शुक्ल द्वितीया 11 जून
पूर्वाषाढ़ा कृष्ण तृतीया 12 जून	उत्तराषाढ़ा कृष्ण चतुर्थी 13 जून	श्रवण कृष्ण पंचमी 14 जून	धनिष्ठा कृष्ण षष्ठी 15 जून	शतभिषा कृष्ण सप्तमी 16 जून	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण अष्ठमी 17 जून	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण नवमी 18 जून
रेवती कृष्ण दशमी 19 जून	अश्विनी कृष्ण एकादशी 20 जून	भरणी कृष्ण द्वादशी 21 जून	कृतिका कृष्ण त्रयोदशी 22 जून	रोहिणी/मृगशिरा कृष्ण चतुर्दशी 23 जून	आर्द्रा कृष्ण अमावस्या/प्रतिपदा 24 जून	पुनर्वसु शुक्ल द्वितीया 25 जून
पुष्य शुक्ल तृतीया 26 जून	आश्लेषा शुक्ल चतुर्थी 27 जून	मघा शुक्ल पंचमी 28 जून	पू० फाल्गुनी शुक्ल षष्ठी 29 जून	उ० फाल्गुनी शुक्ल सप्तमी 30 जून	हस्त शुक्ल अष्टमी 1 जुलाई	चित्रा शुक्ल नवमी 2 जुलाई
स्वाती शुक्ल दशमी 3 जुलाई	विशाखा शुक्ल एकादशी 4 जुलाई	अनुराधा शुक्ल द्वादशी 5 जुलाई	अनुराधा शुक्ल त्रयोदशी 6 जुलाई	ज्येष्ठा शुक्ल चतुर्दशी 7 जुलाई	मूल शुक्ल चतुर्दशी 8 जुलाई	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल पूर्णिमा 9 जुलाई

जनपद रोहतक (हरियाणा) की आर्यसद् का गठन

आर्य निर्माण की कामना

–आर्य राजेश आर्यावर्त

प्रभु आर्यजन को ऐसी उत्तम दिशा दिखा दो।
निर्माण पथ पे चलना प्रभुवर हमें सीखा दो।।

आचार्य हो नगर में, हर ग्राम में, गली में।
उद्देश्य जिनका होए, निर्माण हर घड़ी में।।
हर क्षेत्र, हर नगर में, हो मुखर देश भर में।
आगे बढ़े ये फैलें भर जाएँ विश्व भर में।।
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का गूंजता हो नारा।
प्राणों से बढ़के होए वैदिक धरम हमारा।।
प्रभु आर्यजन को ...

ऐसे सपूत जन्में कर्तव्यनिष्ठ होवें।
आचार जिनके उत्तम, गुण कर्म श्रेष्ठ होवें।।
हो स्वाभिमान जिनमें विद्वान् धीर होवें।
उत्तम चरित्र जिनके जग में प्रसिद्ध होवें।।
पद-लोभ जिनसे हरदम ही दूर भागता हो।
निःस्वार्थ, ब्रह्मचारी हर भारती युवा हो।।
प्रभु आर्यजन को ...

उन्नत हो लहरे जग में यह ओम् ध्वज हमारा।
वेदानुकूल जीवन का लें सभी सहारा।।
वैदिक ऋचा की ध्वनि ही गुंजायमान हो।
पाठन-पठन ऋचा का सुनना-सुनाना होवे।।
कर्तव्य पथ पे युवकों को हे प्रभु चला दो।
हो 'आर्यावर्त' जाग्रत आलस्य को भगा दो।।
प्रभु आर्यजन को ...

सूचना

मासिक पत्रिका कृण्वन्तो विश्वमार्यम् प्रति मास डिजिटली प्रकाशित हो रही है। पत्रिका के लिए अपने लेख, विचार, सुझाव आदि देने के लिए कार्यकारी संपादक से सम्पर्क करें। पत्रिका प्रतिमास दिनांक 10 को सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com पर अपलोड कर दी जाती है।

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj A rya, Delhi

Mool Shankar left his home in May 1884. He was at this time about twenty one years of age. The first night he passed at a village eight miles away from his own village. Next day he got up early in the morning and resumed his journey, avoiding roads and frequented paths, and before it was evening, he had travelled about twenty-five miles. Being too tired to proceed further, he passed the night in a temple of Hanuman. His flight had stunned his parents and had cast a gloom over the house, erstwhile so full of celebration. Sepoys were sent in haste to hunt him up. But he had travelled a long distance, and after a diligent but fruitless search they returned home to the great disappointment of the sorrow-stricken family. Mool Shankar came to know that a party had been looking for a lad, thanked Heaven for his escape, and proceeded on his journey. In the way he met a set of miserable-looking mendicants, who deprived him of all gold and silver ornaments he had. Artless and candid as our youthful hero was he told them the aim of his wanderings and gave them an opportunity for divesting him of all that he had. This they said would prepare him for a peaceful pursuit of immortality.

Next, Mool Shankar turned his steps towards a town Sayal by name, where he learnt that a great scholar and Saint Lala Bhagat was living. He related his adventures, and explained the object of his renunciation to him. The scholar gave him the name of Suddha Chaitanya or the pure-minded, a name which he deserved even at this stage of his life. He stayed there for some time practicing austerities, just as other sadhus did. Leaving Sayal he arrived at a town called Kot Kangra, where he came across a large number of Bairagis(persons who wandered without any specific purpose). He felt that he had not much to learn from them but still he stayed at Kot Kangra for three months.

Soon after, learning that a mela would be held at Sidhpur, a railway station on the bank of the Saraswati, Shudha Chaitanya set out for the place. It was with the hope that he might come across some Yogi who could initiate him into Yoga, for the acquisition of which he had left his home. On the way he met a Bairagi who happened to know him and his family. The sight of an acquaintance after such a long time touched his heart, and caused him some uneasiness too. The Bairagi remonstrated him for having entered the order of Brahmcharis, but our hero had burnt his boats and was not going to retreat. They parted, each other pursuing their own way. Reaching Sidhpur, Shudha Chaitanya put up at a temple already crowded with Swamis and Brahmcharis. In the meanwhile, the Bairagi sent word to the family of Shudha Chaitanya whom he had seen on his way to Sidhpur.

The message once more set the father on his son's trail. He came accompanied by several sepoys to the fair and started a vigorous search. For two days he couldnot get any clue but on the third day, early in the morning entering the temple of Mahadeva, he found himself face to face with his son, now looking a bit transformed on account of the geru (saffron) clothes he was wearing.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

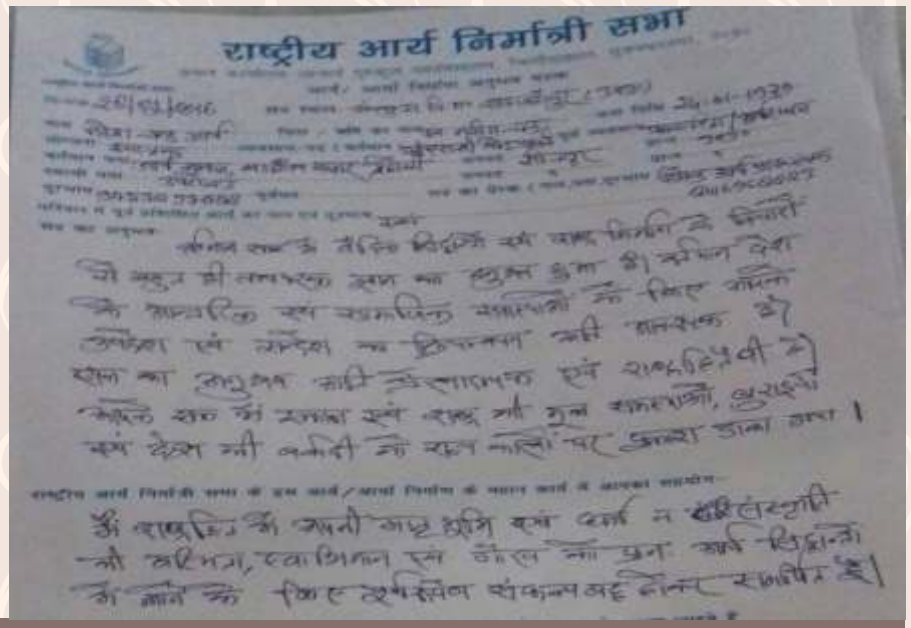
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

वर्तमान सत्र में वैदिक सिद्धान्तों एवं राष्ट्र निर्माण के विचारों से बहुत ही लाभदायक ज्ञान का अनुभव हुआ है। वर्तमान देश के आन्तरिक एवं सामाजिक समस्याओं के लिए आपके उपदेश एवं संदेश का क्रियान्वयन अति आवश्यक है। सत्र का अनुभव अति प्रेरणादायक एवं राष्ट्रहितैषी है। आपने सत्र में समाज एवं राष्ट्र की मूल समस्याओं, बुराइयों एवं देश की बर्बादी के सभी करणों पर प्रकाश डाला गया।

मैं राष्ट्रहित में अपनी मातृभूमि एवं धर्म व संस्कृति की अस्मिता, स्वाभिमान एवं गौरव को पुनः आर्य सिद्धान्तों में लाने के लिए पूर्णरूपेण संकल्पबद्ध होकर समर्पित हूँ।

नामः नरेश चन्द आर्य, आयुः 38 वर्ष, योग्यताः स्नातक,
पताः आर्यसमाज, बड़ा गांव बाजार, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

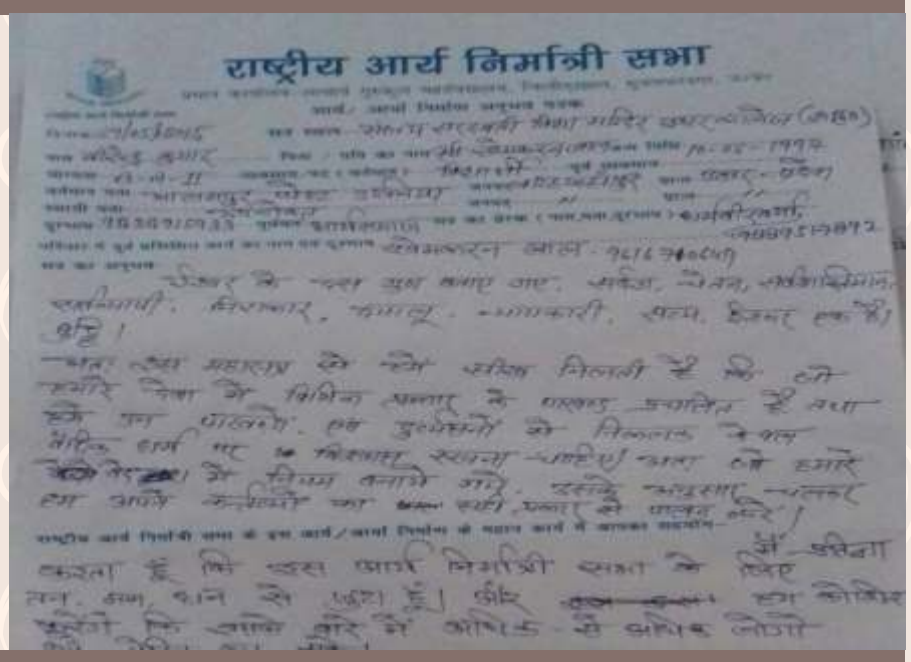
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

ईश्वर के दस गुण बताए गए- सर्वज्ञ, चेतन, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, निराकार, दयालु, न्यायकारी, सत्य, ईश्वर एक है। बुद्धि- अतः इस महासत्र से हमें सीख मिलती है कि जो हमारे देश में विभिन्न प्रकार के पाखण्ड प्रचलित हैं तथा हमें उन पाखण्डों एवं दुर्व्यसनों से निकल कर केवल वैदिक धर्म पर विश्वास रखना चाहिए। अतः जो हमारे वेद में नियम बनाये गये उनके अनुसार चलकर हम अपने कर्त्तव्यों का सही प्रकार से पालन करें। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस आर्य निर्मात्री सभा के लिए तन-मन-धन से जुटा हूँ। और हम कोशिश करेंगे कि इसके बारे में अधिक से अधिक लोगों को प्रेरित कर सकें।

नाम : वीरेन्द्र कुमार, 20 वर्ष, योग्यता : बीए-2,
पताः आलमपुर, उल्लिया, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

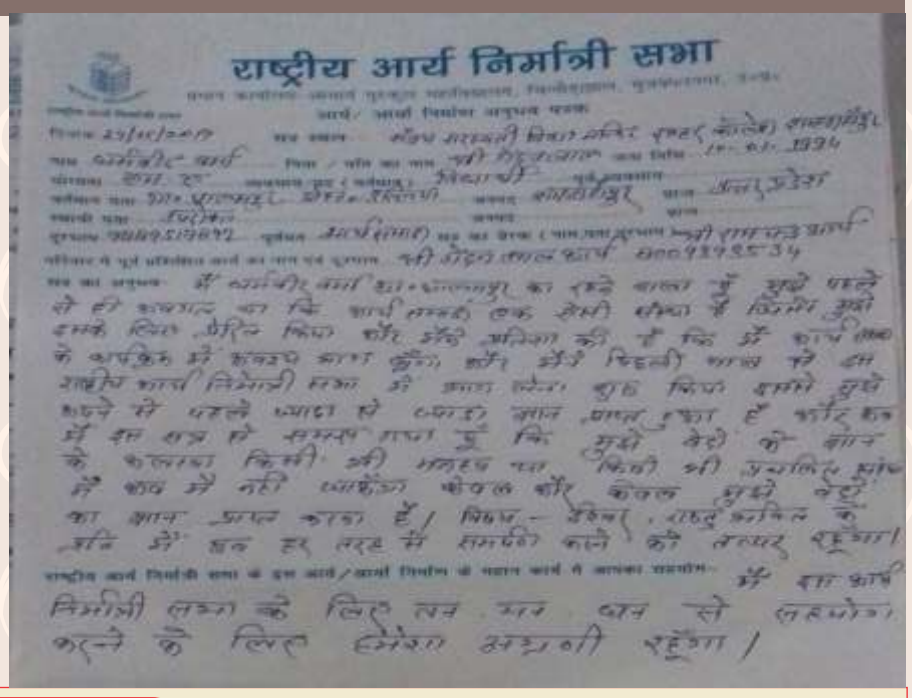
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

मैं धर्मवीर वर्मा ग्राम आल्मपुर का रहने वाला हूँ, मुझे पहले से ही अवगत था कि आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जिसने मुझे इसके लिए प्रेरित किया और मैंने प्रतिज्ञा की है कि मैं आर्य समाज के कार्यक्रम में अवश्य भाग लूंगा और मैंने पिछली साल से इस राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा में भाग लेना शुरू किया इससे मुझे अपने से पहले ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्त हुआ है और अब मैं इस सत्र से समझ गया हूँ कि मुझे वेदों के ज्ञान के अलावा किसी भी मजहब या किसी भी प्रचलित संस्था में अब मैं नहीं जाऊंगा, केवल और केवल मुझे वेदों का ज्ञान प्राप्त करना है। विषय- ईश्वर, राष्ट्रभक्ति के प्रति मैं अब हर तरह से समर्पण करने को तत्पर रहूंगा। मैं इस आर्य निर्मात्री सभा के लिए तन-मन-धन से सहयोग करने के लिए हमेशा अग्रणी रहूँगा।

नामः धर्मवीर, आयुः 23 वर्ष, योग्यताः एम.ए.,
पताः ग्राम आल्मपुर, उल्लिया, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

संध्या काल

आषाढ़ मास, वर्षा ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(10 जून 2017 से 09 जुलाई 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

श्रावण मास, वर्षा ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(10 जुलाई 2017 से 07 अगस्त 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

रामप्रसाद बिस्मिल की कर्मभूमि शाहजहाँपुर उ.प्र. में आयोजित महासत्र के दृश्य

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।